International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 8, August 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

''फिरोजाबाद जनपद के ग्रामीण उद्योगों में श्रमिकों का जीवन स्तर''–

डॉ0 अमरदीप मिश्र

''उद्योगों में जब तक न शान्ति स्थापित हो सकती है न प्रगति आ सकती है। जब तक श्रमिकों को केवल उत्पादन का उपादान न मानकर अपितु उन्हें मनुष्य समझ कर उनकी मूल आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं किया जाता.....। औद्योगिक शान्ति और प्रगति की नींव श्रमिक वर्ग की कार्य कुशलता, उन्नत जीवन स्तर, सामाजिक सुरक्षा तथा समस्त जनता में क्रम शक्ति के उचित वितरण पर ही आधारित होता है।''

जीवन स्तर एक व्यापक शब्द है। किसी के जीवन स्तर को मापने के लिये कोई भी निश्चित नियम नहीं है। व्यक्ति–व्यक्ति का वर्ग–वर्ग का जीवन स्तर भिन्न–भिन्न होता है। व्यक्तियों की अनन्त आवश्यकतायें होती हैं। इन आवश्यकताओं को तीन भागों में बाँटते हैं–

अनिवार्य, आराम, विलासिता सम्बन्धी आवश्यकतायें। कुछ व्यक्ति की कठिनाई से अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा कर पाते हैं तथा जबकि कुछ व्यक्ति इनके अतिरिक्त आराम तथा विलासिता सम्बन्धी आवश्यकताओं को भी पूरा कर लेते हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति करना व्यक्ति की आमदनी पर निर्भर करता है। जीवन स्तर के सम्बन्ध में दो दृष्टिकोंण प्रचलित हैं।

प्रथम यथार्थवादी दृष्टिकोंण है। इस दृष्टिकोण में जीवन–स्तर का सम्बन्ध उस उपयोग से है जैसा कि वह वास्तव में है।

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

दूसरा दृष्टिकोंण आदर्शवादी है। इस दृष्टिकोंण में जीवन–स्तर का सम्बन्ध उस उपयोग से है जैसा कि वह होना चाहिये। अर्थात किसी भी व्यक्ति को या समाज को कितना आवश्यक आरामदायक तथा विलासित की वस्तुओं का उपयोग करना चाहिये। उपर्युक्त दोनों दृष्टिकोणों में काफी अन्तर है। प्रथम दृष्टिकोण का तात्पर्य यह है कि वास्तव में कोई व्यक्ति या समाज कौन–कौन सी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। जबकि द्वितीय दृष्टिकोण के अनुसार किसी व्यक्ति को या समाज को किन–किन आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिये।

''जीवन स्तर'' उन आवश्यकताओं, अनिवार्य वस्तुओं, आरामप्रद वस्तुओं तथा विलासिता वस्तुओं का संकेत करता है जिनके उपभोग करने का कोई व्यक्ति या समाज का कोई वर्ग आदी हो गया है।[1]

व्यक्ति अपनी वस्तुओं को उपभोग करने की आदत को आसानी से बना लेता है, लेकिन उनको उतनी आसानी से समाप्त नहीं कर सकता है। जीवन स्तर का सम्बन्ध आदतों से होता है जो आदतें व्यक्तियों या समाज की बन जाती हैं यही उसका जीवन स्तर होता है। जब एक बार किसी व्यक्ति या समाज की जीवन–स्तर बन जाता है तो वह इसे स्थिर रखने के लिये हर प्रकार का प्रयत्न करता है।

जीवन स्तर एक सापेक्षिक धारणा है। इस शब्द का प्रयोग अधिकतर तुलनात्मक रूप में होता है। किसी भी व्यक्ति या समाज के जीवन स्तर को अकेले रूप में ऊँचे या नीचे कहने का कोई भी अर्थ नहीं है। जीवन स्तर किसी भी व्यक्ति या समाज का जीवन है या ऊँचा यह हम तभी बता सकते हैं कि जब हम उसकी तुलना दूसरे व्यक्ति या दूसरे समाज से करें। अतः जीवन स्तर शब्द का प्रयोग तुलनात्मक रूप में होता है।

''सफलता के सोपान पर व्यक्ति जितना ही ऊँचा चढ़ता है उसका दृष्टिकोण उतना ही विस्तृत और व्यापक होता है। जितना वह देखने की चेष्ठा करता है, उसमें उतने ही ढूँढ़ने की प्रवृत्ति की वृद्धि होती है।''[2]

व्यक्तियों तथा समाज के जीवन स्तर पर कई बातों का प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति का जीवन मुख्यतः दो शक्तियों का परिणाम है।

वातावरण एवं व्यक्तित्व मनुष्यों के व्यक्तित्व के विकास में वातावरण का बड़ा प्रभाव पड़ता है जो भावनायें उसके वर्ग में होती है। वह उसमें आ जाती हैं। व्यक्ति के जीवन स्तर को मुख्य रूप से निम्न घटक प्रभावित करते हैं–

जीवन स्तर में भिन्नता भौगोलिक परिस्थितियों में भिन्नता के कारण होती है। अधिक ठण्डे स्थानों पर व्यक्तियों का खान–पान, कपड़े पहनना तथा रहना, गर्म स्थानों पर रहने वाले व्यक्तियों की तुलना में काफी अलग होता है। जिस स्थान पर जैसी भौगोलिक परिस्थितियाँ पायी जाती है। वहाँ पर व्यक्ति उसके अनुसार अपने को समायोजित कर लेता है।

जिस सामाजिक वातावरण में व्यक्ति जन्म लेता है उन्हीं परम्पराओं तथा रीति–रिवाजों के अनुसार उसका जीवन स्तर बनता है तथा आवश्यकताओं का निर्माण होता है। जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले जिस सामाजिक वातावरण में रहते हैं, वह शहरों के वातावरण से काफी भिन्न होता है। इसी प्रकार हिन्दू समाज में व्यक्ति की अधिकांश आय विवाह, दहेज, दावत आदि पर व्यय कर दी जाती है। चाहे शेष जीवन रूखी–सूखी रोटी तथा फटे–पुराने वस्त्रों पर व्यतीत करना पड़े। जातीय मनोवृत्ति का भी जीवन स्तर पर काफी प्रभाव पड़ता है। कुछ जातियों की मनोवृत्ति धार्मिक होती है तथा कुछ जातियों की प्रवृत्ति अधिक से अधिक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होती है। अतः जातीय मनोवृत्ति का जीवन स्तर से गहरा सम्बन्ध है।

शिक्षा और ज्ञान बढ़ने से बुद्धि परिमार्जित होती है और जीवन तथा समाज के प्रति दृष्टिकोंण बदलता है। शिक्षित व्यक्ति उचित अनुचित का भेद करते हुये अपनी आय का सर्वोत्तम ढंग से उपयोग करता है। एक शिक्षित व्यक्ति गन्दे मकान में नही रह सकता है। शिक्षित व्यक्ति अपना स्तर बनाये रखने के लिये पर्याप्त आय न प्राप्त करने तक यह उचित समझते हैं कि या तो विवाह न किया जाये अथवा परिवार सीमित रखें। वह जीवन–स्तर को बनाये रखने में पर्याप्त सजग रहता है।

जीवन स्तर को प्रभावित करने वाला एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण व्यक्तियों की आय है। यदि किसी व्यक्ति या परिवार की आय कम है तो उसका स्तर प्रायः नीचा और यदि अधिक है तो ऊँचा होगा। जिन व्यक्तियों की आय कम है, वे

कठिनाई से अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाते हैं। ऐसे व्यक्ति उत्तम वस्त्र, उत्तम भोजन तथा रहने के लिये अच्छे मकान की बातें वे सोच भी नहीं सकते। इसके विपरीत जिन व्यक्तियों की आय अधिक होती है। वे अनिवार्य वस्तुओं के अतिरिक्त आराम और विलासता की वस्तुओं का भी उपयोग करते हैं। आय में कमी आने या वृद्धि होने का जीवन स्तर पर काफी प्रभाव पड़ता है।

जीवन स्तर का विवेकपूर्ण व्यय (ढंग से खर्च) से गहरा सम्बन्ध है। व्यक्ति विशेष की आमदनी अधिक हो सकती है। लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं है कि उसका जीवन स्तर ऊँचा हो। इसका मुख्य कारण यह है कि यदि व्यक्ति विशेष शराब, जुआ, वेश्यागमन आदि पर खर्च करता है तो उसका जीवन स्तर समान आय वाले व्यक्ति की तुलना में ही न होगा। यदि आमदनी को खर्च करने का तरीका अच्छा है तो कम आमदनी होने पर भी जीवन स्तर ऊँचा हो सकता है। जीवन स्तर में आमदनी के साथ–साथ इसको खर्च करने का तरीका महत्व रखता है।

मुद्रा की क्रय शक्ति प्रत्येक समय एक सी नहीं रहती है। क्रय शक्ति हमेशा बदलती रहती है। जब क्रय शक्ति अधिक होती है, व्यक्ति कम आमदनी होते हुये भी अधिक वस्तुओं का उपभोग कर सकता है और यदि क्रय शक्ति कम है तो इसके विपरीत स्थिति होती है। इस प्रकार जीवन स्तर तथा मुद्रा की क्रय शक्ति में घनिष्ट सम्बन्ध है।

आज के समाज में आर्थिक सामाजिक तथा जातीय आधार पर अनेक वर्ग बन गये हैं। प्रत्येक वर्ग के अपने–अपने रीति–रिवाज, खान–पान के तरीके और परम्परायें होती हैं जो कि उनके जीवन स्तर को प्रभावित करता है जो व्यक्ति जिस काम को करता है या जिस प्रकार के व्यक्तियों में रहता है वह उसी वर्ग का सदस्य बन जाता है और उसे उस वर्ग की रीतियों के अनुसार रहना–सहना पड़ता है। मोटे तौर पर समाज में तीन वर्ग हैं– मजदूर वर्ग या निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग व उच्च वर्ग।

निम्न वर्ग का रहन–सहन बहुत नीचा होता है। इस वर्ग की आय तो बहुत कम होती ही है। साथ ही विवेकपूर्ण ढंग से व्यय भी नहीं करते हैं। इस वर्ग के व्यक्ति जुआ, शराब, सट्टा लगाना तथा वेश्यागमन पर धन का अपव्यय करते हैं

जिससे उनकी कार्यकुशलता कम होती है और अनिवार्य आवश्यकतायें भी पूरी नहीं कर पाते हैं। इस कारण इनका जीवन स्तर बहुत ही नीचा है। ये इसमें कोई लाज या शर्म भी अनुभव नहीं करते हैं क्योंकि उनके वर्ग के सभी लोगों का हाल एक सा है। किन्तु मध्यम वर्ग के लोगों की अपनी सामाजिक स्थिति के अनुसार अपना जीवन स्तर बनाये रखना पड़ता है जबकि इस वर्ग की आय पर्याप्त नहीं है। उच्च वर्ग में थोड़े से व्यक्ति आते हैं। यह व्यक्ति अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं की यथेष्ट मात्रा में पूरी करते हैं। अतः उनका जीवन–स्तर ऊँचा होता है।

व्यक्तियों के जीवन–स्तर पर धार्मिक विचारों का भी प्रभाव पड़ता है। हिन्दू धर्म के अनुयायी सादा जीवन बिताते हैं तथा धार्मिक अवसरों पर बहुत सा धन व्यय करते हैं चाहे इससे कोई भी आर्थिक लाभ न हो।

अतः स्पष्ट है कि व्यक्ति के जीवन स्तर पर अनेक बातों का प्रभाव पड़ता है। इसी कारण व्यक्तियों की जीवन स्तर में भिन्नता पाई जाती है।

किसी परिवार की एक विशेष अवधि में होने वाली आय और सम्भावित व्यय के विस्तृत ब्योरों को पारिवारिक बजट कहते हैं। सर्वेक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि जनपद फिरोजाबाद में ग्रामीण उद्योगों में लगे हुये लगभग सभी श्रमिक अशिक्षित हैं। उनको पारिवारिक बजट के सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं है। उनसे पूछतांछ करने पर ज्ञात हुआ कि वह अपनी आमदनी को किसी भी निश्चित विधि द्वारा खर्च नहीं करते हैं जो खर्च सामने आ जाता है, उसी पर खर्च आवश्यकता की प्राथमिकता के अनुसार कर देते हैं। यह श्रमिक अपनी आमदनी को बजट बनाकर खर्च नहीं करते हैं। यह श्रमिक अपनी व्यय को विभिन्न मदों पर कितना–कितना खर्च करते हैं। इस सम्बन्ध में भी वे संतोषजनक उत्तर नहीं दे सके। इनका कहना है कि हम अपने परिवार का भरण पोषण बड़ी मुश्किल से कर पाते हैं तथा अपनी आय का अधिकांश भाग भोजन सम्बन्धी आवश्यकताओं पर व्यय करते हैं। सर्वेक्षण करने पर पाया गया कि इनका जीवन स्तर काफी गिरा हुआ है। गरीबी का ताण्डव इनके चारों तरफ छाया हुआ है। यह श्रमिक अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की ही पूर्ति बड़ी मुश्किल से कर पाते हैं। अपनी आय को किस अच्छे तरीके से खर्च करें जिससे अधिक से अधिक उपयोगिता प्राप्त हो। इस बात का इनको ज्ञान नहीं है। एकतरफ तो परिवार के अधिकारी को

देखते हुये इनकी आय बहुत कम है तथा इन श्रमिकों को शादियों, बीमारियों एवं अन्य ऐसे अवसरों पर जिन पर रूपये अधिक खर्च होते हैं। इनको अपने मालिकों या गाँवों के साहूकारों से ऋण लेना पड़ता है, जिससे अधिकांश श्रमिक कर्ज में डूबे रहते हैं।

श्रमिक वर्ग का शोषण प्रारम्भ से ही होता है लेकिन जब आज के युग में मंहगाई चरम सीमा पर पहुँच गई है। मध्यम वर्ग का श्रमिक कहीं का नहीं रह गया है। यदि वह पेट भरने की सोचता है, तो तन ढकने को नहीं है और यदि तन ढकने की सोचता है तो पेट खाली है। सर्वेक्षण से उनके व्यय के बारे में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती है।

ज्यादातर ग्रामीण उद्योग में लगे सभी श्रमिक स्थानीय हैं और लगभग सभी श्रमिकों के निजी मकान हैं तथा इनका किराये इत्यादि का कोई व्यय नहीं है। यद्यपि यह मकान ऐसी वस्तुओं में स्थापित हैं जो स्वास्थ्य तथा वातावरण के दृष्टिकोंण से उपयुक्त नहीं है। तेल व प्रकाश, बिजली के प्रकाश का व्यय भी नाम मात्र का था लेकिन अब सुधार हो रहा है। अब वह भी उनकी आय का लगभग 5 प्रतिशत तक बैठता है। वर्तमान समय में खाद्य की समस्या गम्भीर हो गयी है लेकिन सर्वेक्षण करने से पाया गया कि जब गेहूँ 1500 रू0 प्रति कुन्तल बिक रहा है। इन ग्रामीण उद्योगों में लगे श्रमिकों को इस मंहगाई के कारण परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीण उद्योगों में लगभग 60 प्रतिशत श्रमिक मुस्लिम हैं तथा शेष श्रमिक हिन्दू जाति के हैं लेकिन इन सभी के राशन कार्ड बने हुये हैं तथा अपने राशन की लगभग 50 प्रतिशत की पूर्ति राशन की दुकानों से खरीदकर करते हैं। शेष बाजार से खरीदकर करते हैं। ग्रामीण उद्योगों में लगे श्रमिक दूध तथा चिकनाई (देशी घी) का प्रयोग कम मात्रा में कर पाते हैं। दूध का प्रयोग केवल चाय बनाने के लिये ही कर पाते हैं। इन श्रमिकों का लगभग 70–75 प्रतिशत तक भोजन पर व्यय हो जाता है।[3]

कपड़ा भी मूल आवश्यकताओं के अन्तर्गत आता है। जनपद फिरोजाबाद के ग्रामीण उद्योग में लगे श्रमिक इस पर बहुत कम खर्च करते हैं। सर्वेक्षण करने से ज्ञात हुआ कि अधिकतर श्रमिक त्यौहारों जैसे ईद, होली, दीपावली या रक्षाबन्धन के अवसर पर ही नये कपड़ों की व्यवस्था कर पाते हैं। अधिकतर श्रमिक इस व्यय पर भी किये जाने वाली धनराशि बताने में असमर्थ रहे लेकिन यह भी 5–10 प्रतिशत तक

व्यय इस मद पर किया जाता है। अन्य व्यय पर खर्च करने में अधिकांश नवयुवक श्रमिक पान, बीड़ी, सिगरेट, सिनेमा तथा तम्बाकू कुछ ऐसी वस्तुएं हैं जिन पर प्रत्येक परिवार में कुछ न कुछ व्यय अवश्य होता है। जनपद फिरोजाबाद में श्रमिकों का लगभग आय का 5 से 7 प्रतिशत इन्हीं मदों पर होता है।[4]

लेकिन सरकार का मुख्य प्रचार प्रसार पढाई पर अधिक होते हुये भी शिक्षा केवल उन्हीं श्रमिकों के बच्चे प्राप्त करने में समर्थ हो पाते हैं जो विशेष ध्यान देते हैं जो कि श्रमिकों के ग्रामीण स्तर पर कार्य करने वाले श्रमिकों के तहसील, सामुदायिक विकास खण्ड तथा गांवों में प्राइमरी स्कूल होने के कारण इन श्रमिकों के बच्चे इन स्कूलों में शिक्षा, कक्षा 8 तक तो प्राप्त कर ही लेते हैं। उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में ज्ञात हुआ कि 3 से लेकर 6 प्रतिशत तक श्रमिकों के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करने में समर्थ रहे हैं लेकिन ग्रामीण स्तर पर सरकार द्वारा सुविधायें परस्पर दी जा रही हैं जैसे स्नातक तक बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा। साधारणतः 2 प्रतिशत से लेकर 5 प्रतिशत तक श्रमिकों की आय का व्यय इस मद पर होता है।[5]

संदर्भ सूचीः–

1- Worker's Standard of Living I.L.O.

2. मार्शल द्वारा

3,4,5. व्यक्तिगत सर्वेक्षण

गाँव व पोस्ट–नारखी धौकल

जिला–फिरोजाबाद (उ0प्र0)